❍ 20 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *"हम विश्व के मालिक बन रहे हैं" - इसी नशे में रहे ?*

➢➢ *अपनी अवस्था मजबूत बनायी ?*

➢➢ *बहानेबाज़ी के खेल को समाप्त किया ?*

➢➢ *मैं और मेरेपन के भावो से वैराग्य रहा ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए। कर्म भी करो और याद में भी रहो। *जो सदा कर्मयोगी की स्टेज पर रहते हैं वह सहज ही कर्मातीत हो सकते हैं। जब चाहे कर्म में आये और जब चाहे न्यारे बन जायें।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को भाग्यवान समझ हर कदम में श्रेष्ठ भाग्य का अनुभव करते हो? क्योंकि इस समय बाप भाग्यविधाता बन भाग्य देने के लिए आये हैं। *भाग्यविधाता भाग्य बांट रहा है। बांटने के समय जो जितना लेने चाहे उतना ले सकता है। सभी को अधिकार है। जो ले, जितना ले। तो ऐसे समय पर कितना भाग्य बनाया है, यह चेक करो। क्योंकि अब नहीं तो फिर कब नहीं।*

〰✧ *इसलिए हर कदम में भाग्य की लकीर खींचने का कलम बाप ने सभी बच्चों को दिया है। कलम हाथ में है और छुट्टी है - जितनी लकीर खींचना चाहो उतना खींच सकते हो। कितना बिढ़या चांस है! तो सदा इस भागयवान समय के महत्व को जान इतना ही जमा करते हो ना?* ऐसे न हो कि चाहते तो बहुत थे लेकिन कर न सके, करना तो बहुत था लेकिन किया इतना। यह अपने प्रति उल्हना रह न जाए। समझा?

〰✧ *तो सदा भाग्य की लकीर श्रेष्ठ बनाते चलो और औरों को भी इस श्रेष्ठ भाग्य की पहचान देते चलो। 'वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य!' यही खुशी के गीत सदा गाते रहो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

〰✧ जैसे आवाज में आना अति सहज लगता है ऐसे ही आवाज से परे जाना इतना सहज है? यह बुद्धि की एक्सरसाइज सदैव करते रहना चाहिए। जैसे शरीर की एक्सरसाइज शरीर को तन्दरुस्त बनाती है ऐसे *आत्मा की एक्सरसाइज आत्मा को शक्तिशाली बनाती है।* तो यह एक्सरसाइज आती है या आवाज में आने की प्रैक्टिस ज्यादा है?

〰✧ *अभी-अभी आवाज में आना और अभी-अभी आवाज से परे हो जाना* - जैसे वह सहज लगता है वैसे यह भी सहज अनुभव हो। क्योंकि आत्मा मालिक है। सभी राजयोगी हो, प्रजायोगी तो नहीं? राजा का काम है ऑर्डर पर चलाना। तो *यह मुख भी आपके ऑर्डर पर हो* - जब चाहो तब चलाओ और जब चाहो तब नहीं चलाओ आवाज से परे हो जाओ

〰✧ लेकिन इस रूहानी एक्सरसाइज में सिर्फ मुख की आवाज से परे नहीं होना है - *मन से भी आवाज में आने के संकल्प से परे होना है।* ऐसे नहीं मुख से चुप हो जाओ और मन में बातें करते रहो। *आवाज से परे अर्थात मुख और मन दोनों की आवाज से परे, शान्ति के सागर में समा जायें।* यह स्वीट साइलेन्स की अनुभूति कितनी प्यारी है! अनुभवी तो हो ना।

✧°˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ बापदादा का हर एक बच्चे से बहुत-बहुत-बहुत प्यार है। ऐसे नहीं समझे कि हमारे से बापदादा का प्यार कम है। *आप चाहे भूल भी जाओ लेकिन बाप निरन्तर हर बच्चे की माला जपते रहते हैं क्योंकि बापदादा को हर बच्चे की विशेषता सदा सामने रहती है। कोई भी बच्चा विशेष न हो, यह नहीं है।* हर बच्चा विशेष है। बाप कभी एक बच्चे को भी भूलता नहीं है, तो सभी अपने को विशेष आत्मा हैं और विशेष कार्य के लिए निमित्त हैं, ऐसे समझ के आगे बढ़ते चलो। *बापदादा अगर एक-एक की महिमा करे तो सारी रात लग जाये।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप द्वारा गरीब भारत का, फिर से साहूकार बनाना"*

➳ _ ➳ मीठे मधुबन के डायमण्ड हॉल में दादी गुलजार के तन में विराजे... अपने प्रियतम बाबा को मै आत्मा निहारते हुए... अपने महान भाग्य को देख रही हूँ... कि जनमो की भटकन और दुखो के थपेड़ो के बीच... *यूँ जीवन में ईश्वर, सुखद झोके की तरह... जीवन में सुखो की ठंडक लायेगा*... और मेरा बिगड़ा हुआ भाग्य यूँ इस तरहा ईश्वरीय हाथो में संवर जायेगा... यह तो मन की कभी कल्पनायें भी न थी... *आज भगवान की गोद में बैठकर नाजो से पल रही हूँ.*.. और 21 जनमो के लिए साहूकार बन रही हूँ... यह भाग्य की जादूगरी नही तो भला और क्या है... *लाखो दिल बिछे थे... उस पर मर मिटने के लिए... और उसने सिर्फ मुझे अपने दिल में सजा लिया*...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सतयुगी अमीरी से भरते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... जब घर से निकले थे, कितने खुबसूरत खिले फूल थे, और सुखो की अमीरी से भरपूर थे... अब देह भान के प्रभाव ने किस कदर गरीबी से भर दिया है... तो *अब ईश्वर पिता की यादो भरा हाथ पकड़कर... फिर से वही सुखो की दौलत और खुशियो भरी दुनिया के पुनः मालिक बन जाओ.*..

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से अपना खोया वजूद और सुखो की दुनिया को पुनः पाते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपके बिना, कितना भटकी और दुखो में गहरे घिरी थी... आपने प्यारे बाबा आकर... मुझे सदा के सुख से भरपूर कर दिया है.. मै आत्मा, *आपके साये में अपनी सच्ची चमक और गुणो की दौलत से पुनः अमीर हो रही हूँ.*..

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपनी सुखो की सत्ता और देवताई शानो शौकत से सजाते हुए कहा :-* " मीठे प्यारे लाडले बच्चे... सदा ईश्वरीय यादो में खोकर... जनमो के दुखो से मुक्त हो जाओ... *सारा भारत फिर से सोने की चिड़िया बन चहक उठे... हर दिल ईश्वरीय यादो में अपने खोये राज्य को पुनः पाकर 21 जनमो के लिए साहूकार बन जाये.*.. यही चाहत ईश्वर पिता अपने दिल में लिए इस धरा पर उतर आया है..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की दिली चाहत को पूरा करने के लिए सम्पूर्ण समर्पित होकर कहती हूँ ;-* "मीठे मीठे बाबा... मै आत्मा आपकी यादो में जो सुखो से निखर उठी हूँ... *यही खुशियां हर दिल पर बाँट कर, उन्हें आप समान दौलतमंद बना रही हूँ.*.. सत्य भरी राहो पर चलाकर... हर दिल को सुखो से सजा रही हूँ... पूरे भारत को ज्ञान रत्नों से साहूकार बना रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को गुणो और शक्तियो की दौलत से भरकर सदा के लिए साहूकार बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता ने जो आप बच्चों पर ज्ञान रत्नों की खानों को लुटाया है... उसे अपनी बाँहों में भरकर, सदा के लिए अमीरी से भरपूर हो जाओ... *भारत जो अपनी अमीरी के लिए विख्यात था... वह अमीरी पुनः बाँहों में लौट आये..*. इसलिए याद और ज्ञान के समन्दर में गहरी डुबकी लगाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को असीम स्नेह से भरे दिल से निहारते हुए कहती हूँ :-* "सच्चे साथी बाबा मेरे... सिवाय भगवान के मेरी खोयी अमीरी मेरे सुखो की जागीर मुझ आत्मा... को कोई लौटा ही नही सकता था सिवाय मेरे प्यारे बाबा के...मीठे बाबा *आपने मेरे खोये सुख मेरे दामन में पुनः सजाये है... और मै आत्मा अपने इस मीठे भाग्य पर नाज कर रही हूँ.*.."प्यारे बाबा से यूँ रुहरिहानं कर मै आत्मा... साकारी तन में लौट आयी..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सदा इस नशे में रहना कि हम ब्रह्माण्ड और विश्व के मालिक बन रहे हैं*"

➳ ➳ अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य के नशे में बैठी. अपने मीठे बाबा के प्रेम की

लगन में मगन मैं उनकी मीठी यादों में रमण करती हुई *अनुभव करती हूँ कि जैसे मेरे शिव पिता अपने साकार रथ पर विराजमान हो कर, अपनी बाहें पसारे मुझे बुला रहें हैं और कह रहे हैं:- "आओ मेरे डबल सिरताज बच्चे, मेरे पास आओ"*। अव्यक्त बापदादा के ये अव्यक्त महावाक्य जैसे ही मेरे कानों में सुनाई पढ़ते हैं मैं अपनी अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जाती हूँ और सूक्ष्म आकारी देह धारण कर, अपने साकारी तन से बाहर निकल कर, बापदादा के पास उनके अव्यक्त वतन की ओर चल पड़ती हूँ।

➳ _ ➳ अपनी लाइट की सूक्ष्म आकारी देह को धारण किये मैं फ़रिशता साकार लोक में भ्रमण करता हुआ, आकाश को पार करके पहुँच जाता हूँ सूक्ष्म आकारी फरिश्तों की उस अति सुंदर मनोहारी दुनिया में जहां बापदादा बाहें पसारे मेरा इंतजार कर रहें हैं। बापदादा के सामने पहुँच कर, मैं बिना कोई विलम्ब किये उनकी बाहों में समा जाता हूँ। *अपने बाबा की ममतामयी बाहों के झूले में झूलते हुए मैं असीम आनन्द से विभोर हो रहा हूँ*। बाबा का प्रेम और वात्सलय बाबा के हाथों के स्पर्श से मैं स्पष्ट अनुभव कर रहा हूँ।ऐसे निस्वार्थ प्रेम को पा कर मेरी आँखों से खुशी के आँसू छलक रहें हैं। बाबा मेरे आंसू पोंछते हुए बड़ी मीठी दृष्टि से मुझे देख रहें हैं।

➳ _ ➳ बाबा की मीठी दृष्टि से, बाबा की सर्वशक्तियाँ मुझ फ़रिश्ते में समा रही हैं। मैं स्वयं को परमात्म बल से भरपूर होता हुआ अनुभव कर रहा हूँ। *बापदादा के प्यार की शीतल छाया में मैं फरिश्ता असीम सुख और आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ*। बापदादा अपना वरदानीमूर्त हाथ मेरे सिर पर रख कर मुझे वरदानों से भरपूर कर रहे हैं। हर प्रकार की सिद्धि से बाबा मुझे सम्पन्न बना रहे हैं। सर्व सिद्धियों, शक्तियों और वरदानों से मुझे भरपूर करके अब बाबा मुझे भविष्य नई दुनिया का साक्षात्कार करवा रहें हैं।

➳ _ ➳ ज्ञान के दिव्य चक्षु से मैं देख रहा हूँ, बाबा मेरा हाथ पकड़ कर मुझे आने वाली नई सतयुगी दुनिया मे ले जा रहें हैं और बड़े स्नेह से मुझे कह रहे हैं देखो, बच्चे:- इस नई दुनिया के आप मालिक हो" *अब मैं स्वयं को विश्व महाराजन के रूप में देख रहा हूँ। सारे विश्व पर मैं राज्य कर रहा हूँ। मेरे राज्य में डबल ताज पहने देवी देवता विचरण कर रहें हैं। राजा हो या प्रजा

सभी असीम सुख, शान्ति और सम्पन्नता से भरपूर हैं*। चारों ओर ख़ुशी की शहनाइयाँ बज रही हैं। प्राकृतिक सौंदर्य भी अवर्णनीय है। रमणीकता से भरपूर सतयुगी नई दुनिया के इन नजारों को देख मैं मंत्रमुग्ध हो रहा हूँ।

➳ _ ➳ इस खूबसूरत दृश्य का आनन्द लेने के बाद मैं जैसे ही अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होती हूँ। *स्वयं को एक दिव्य अलौकिक नशे से भरपूर अनुभव करती हूँ और अब मैं सदा इसी रूहानी नशे में रहते हुए कि मैं ब्रह्माण्ड और विश्व की मालिक बन रही हूँ, निरन्तर अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ा रही हूँ*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं बहानेबाजी के खेल को समाप्त करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर दातापन के स्वमानधारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा मैं और मेरेपन के भावों से वैराग्य धारण करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा बेहद की वैरागी हूँ ।*
✺ *मैं बंधनमुक्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने

का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *चाहे विदेशी, चाहे भारतवासी दोनों ही भाग्य विधाता के बच्चे हैं इसलिए हर ब्राह्मण बच्चा विजयी है।* सिर्फ हिम्मत को इमर्ज करो। हिम्मत समाई हुई है क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो- ऐसे हो ना? (सभी हाथ हिला रहे हैं) हाथ तो बहुत अच्छा हिलाते हैं। *अभी मन से भी सदा हिम्मत का हाथ हिलाते रहना। बापदादा को खुशी है, नाज है कि मेरा एक-एक बच्चा अनेक बार का विजयी है। एक बार नहीं, अनेक बार की विजयी आत्मायें हो।* तो कभी यह नहीं सोचना, पता नहीं क्या होगा? होगा शब्द नहीं लाना। विजय है और सदा रहेगी।

➳ _ ➳ 2. *मायाजीत हैं। हम नहीं होंगे तो और कौन होगा, यह रूहानी नशा इमर्ज करो।* और-और कार्य में मन और बुद्धि बिजी हो जाती है ना तो नशा मर्ज हो जाता है। लेकिन बीच-बीच में चेक करो कि कर्म करते हुए भी यह विजयीपन का रूहानी नशा है? *निश्चय होगा तो नशा जरूर होगा।* *निश्चय की निशानी नशा है और नशा है तो अवश्य निश्चय है। दोनों का सम्बन्ध है।*

➳ _ ➳ बापदादा के पास बच्चों के पत्र वा चिटकियां बहुत अच्छे-अच्छे हिम्मत की आई हैं कि हम अब से 108 की माला में अवश्य आयेंगे। बहुतों के अच्छे-अच्छे उमंग के पत्र भी आये हैं और रूह-रिहान में भी बहुतों ने बापदादा को अपने निश्चय और हिम्मत का अच्छा समाचार दिया है। *बापदादा ऐसे बच्चों को कहते हैं - बाप ने आप सबके बीती को बिन्दू लगा दिया।* इसलिए बीती को सोचो नहीं, अब जो हिम्मत रखी है, हिम्मत और मदद से आगे बढ़ते चलो। *बापदादा ऐसे बच्चों को यही वरदान देते हैं - इसी हिम्मत में. निश्चय में. नशे में अमर भव।*

✺ *ड्रिल :- "निश्चय बुद्धि बन विजयीपन के रूहानी नशे का अनुभव करना"*

➳ _ ➳ *मैं फरिश्ता उड़ती हुई ऊंची पहाड़ी पर आकर बैठ जाती हूँ...* और देखती हूँ कि दूर देश के फ़रिश्ते भी उड़ कर कभी पावन भारत भूमि पर आते तो कभी चले जाते... सबके मन खुशियों से, उमंग से भरे हुए हैं... हैं तो सभी भाग्य विधाता के बच्चे, ब्राह्मण बच्चे... कल-कल बहते पानी की मधुर आवाज से मन मगन हो जाता है... और *बुद्धि के पटल पर चलचित्र चलने लगता है.... इसमें मेरी ही कल्प-कल्प की कहानी चल रही है...*

➳ _ ➳ *मैं विजयी आत्मा हूँ... सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि हूँ... और इसी नशे का अनुभव कर रही हूँ की मैं आत्मा सिर्फ एक बार की नहीं... बल्कि अनेक बार की कल्प कल्प की विजयी आत्मा हूँ।* बापदादा रूहानी दृष्टी देते हुए मुझ आत्मा को... विजयी भव का वरदान दे रहे हैं... और मैं आत्मा बापदादा से इस वरदान को पाकर मास्टर सर्वशक्तिवान की पॉवरफुल स्थिति का अनुभव कर रही हूँ... मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति मुझे मायाजीत बनाती जा रही है... *माया के हर मुखौटे को परखने की कसौटी से उन पर जीत पाती जा रही हूँ...*

➳ _ ➳ *सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि की यह अवस्था मुझ आत्मा को अत्यंत ही सुखदायी रूहानी नशे का अनुभव करवा रही है...* मैं आत्मा अपने कर्मक्षेत्र पर अपना हर कर्म विजयी मूर्त आत्मा के इसी रूहानी नशे में स्थित होकर कर रही हूँ... और सदैव बापदादा की छत्रछाया में रहते हुए हर सेकंड अपने अलौकिक मार्ग में तीव्र गति से आगे बढ़ते हुए हर कार्य में सफलता का अनुभव कर रही हूँ... *स्वयं भगवान मेरा साथी है - यह रूहानी नशा मुझ आत्मा को निडर बना मायाजीत अवस्था का अनुभव करवा रहा है...*

➳ _ ➳ *मैं परम पवित्र आत्मा अपने में निश्चय और हिम्मत का बल अनुभव करती हूँ...* बीती को बीती कर आगे बढ़ती जा रही हूँ... सभी सोच-फिकर बापदादा को देकर हल्की हो गयी हूँ... अब मैं आत्मा अपने हर कर्म में हर कदम पर हिम्मत का एक कदम उठा बापदादा की हजार गना मदद का

अनुभव कर रही हूँ... और मेरा यह अलौकिक ब्राह्मण जीवन सम्पूर्ण निर्विघ्न होता जा रहा है... अब जबकि परमात्मा ने स्वयं मुझ आत्मा की सभी बीती को बिंदु लगा दिया है... मैं आत्मा 108 की विजयमाला में होने का अनुभव कर रही हूँ... *कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हूँ... ओम् शान्ति।*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔